पंथ प्रेम को अटपटो

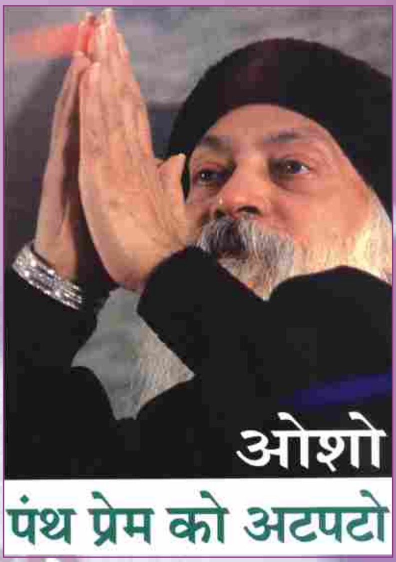

अटपटी बात

पंथ प्रेम को अटपटो
कोइयान जानत वीर।
कै मन जानत आपनो
कै लागी जेहि पीर।

दयाबाई ही नहीं
सभी रहस्यदर्शी
सदा से कहते आये हैं
कि प्रेम का पंथ अटपटा है,
कि प्रेम की बात अटपटी है।

ओशो कहते हैं–
'जो तर्क में न बैठे,
जो गणित में न समाये।
पाना हो तो गंवाना पड़े
पहुंचना हो, खो जाना पड़े।

कमल बड़ी अटपटी बात है।
देखा, कीचड़ में खिलता है!
गंदगी में खिलता है।
इतना सुंदर!
कुरूप कीचड़ में खिलता है।

शरीर के ही कीचड़ में
परमात्मा
एक दिन खिलता है।
अटपटी बात है।

काम-वासना के ही कीचड़ में,
प्रेम का कमल
एक दिन खिलता है।
अटपटी बात है।

जब बुद्ध
बुद्ध हो जाते हैं
तो क्या हुआ–
कीचड़ में,
कमल खिल गया।

तुम अभी कीचड़ हो,
बुद्ध कमल हो गये।'

जब ओशो कहते हैं–
'संभोग
समाधि बन जाती है
कीचड़
कमल बन जाता है
और काम ही राम
बन जाता है!'
तो इतना ही कहते हैं
कि अटपटी बात घटती है।

और यही अटपटी बात
ओशो के जीवन-दर्शन में
रोज-रोज घट रही है।

ओशो की प्रीति में
ओशो की मस्ती में
कमल खिल रहे हैं
बुद्ध हो रहे हैं।

ओशो के पास
आने का साहस
ओशो के ध्यान-प्रयोगों में
डूबने का साहस–
और रूपांतरण
निश्चित है।

ओशो का कारवां
दीवानों का है
ओशो का कारवां
मस्तों का है
ओशो का कारवां
हिम्मतवरों का है।
आओ–स्वागत है।

– स्वामी नरेन्द्र बोधिसत्व